Indian Streams Research Journal
Volume 2, Issue.12,Jan. 2013
ISSN:-2230-7850
Available online at www.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

प्रगतिवादी काव्य में जन–चेतना

गिरि डी.व्ही.

हिंदी विभाग
स्वामी विवेकानंद वरिष्ठ महाविद्यालय,मंठा जि.जालना

सारांश

1936 से 1945 के बीच की काव्यधारा को प्रगतिवादी काव्य धारा कहते है। यह काव्यधारा एक आंदोलन के रूप में विकसित हुए है। 1917 में रूस में क्रांति हुई। इस क्रांति ने साम्राज्यवाद को खत्म कर दिया और वहाँ सर्वहारा वर्ग के हाथो में सत्ता आई। मार्क्स का दर्शन इस क्रांति के मूल में था। ' वर्गहीन समाज की स्थापना ' यह मार्क्स के विचारो का सार है। प्रत्येक मनुष्य समाज की प्रगति के लिए कार्य करे; कोई बेकार न बैठे और समाज के किसी भी स्तर पर शोषण ना होः यह मार्क्सवादी विचारधारा का आग्रह है। धर्म अंधश्रध्दा, अंधविश्वासों का खंडन करके उसने मनुष्य मात्र को महत्व दिया।

प्रस्तावना

इसी कारण इस रूसी व्यवस्था तथा मार्क्सवादी विचारधारा की ओर कवि, कलाकार तथा आलोचक आकृष्ट हुए। 1917 से 1935 तक रूस की जो प्रगति हुई, उससे ये लोग प्रभावित हुए और इसी प्रकार की व्यवस्था का आह्वान अपने साहित्य के माध्यम से करने लगे। कार्ल मार्क्स साहित्य की उपयोगिता को महत्त्व देता है। साहित्य भी क्रांति का सशक्त माध्यम बन सकता है ऐसा उसका विश्वास था। इसी कारण उसने परम्पराबध्द साहित्य का खंडन करते हुए ऐसे साहित्य निर्माण का आग्रह किया जिससे समाज की प्रगति हो। सर्व सामान्य लोगों के दुःख दर्दो को अभिव्यक्ति मिले। अब हमे जनसामान्य की प्रगति के लिए लिखना होगा। परिणामतः इस विचारधारा की ओर दुनिया के सारे साहित्यकार आकृश्ट हुए। स्पष्ट है कि 'प्रगतीवादी विचारधारा' का आग्रह मार्क्स ने किया और बाद मे साहित्यकारो ने इसे स्वीकार किया। डॉ. शम्भुनाथ पांण्डेय के अनुसार – '' हिंदी काव्य मे छायावाद के चरम उत्कर्श के पश्चात प्रगतिवाद का आना एक ऐतिहासिक आवश्यकता एवं अनिवार्यता थी।'' इसका कारण यह है कि सन 1930 के बाद छायावादी कविता अपने वृत्त म घूमने लगी। वेदना, निराशा, वैयक्तिकता की प्रवृत्ति इतनी बढ गयी कि वह अहं केंद्रित बन गयी। छायावाद निश्चित रूपसे मानवतावादी काव्य है। परंतु उसका यह मानवतावाद धीरे–धीरे अधिक आदर्शवादी हो गया कि उससे विश्वास उठ गया। प्रकृति–चित्रण की अधिकता ने सामाजिक यथार्थ को खत्म कर दिया। इसलिए छायावाद के बाद सामाजिक यथार्थवादी विचारधारा आयी, और उस ओर साहित्यकार मुड गया। पन्त को छायावादी काव्य की इस मर्यादा का ज्ञान हुआ था, इसी कारण उन्हौंने 'युगान्त' लिखकर यह स्पष्ट कर दिया कि उस स्वर्णिम युग का अब अंत हो गया है। तथा अब 'युगवाणी' याने नए युग की आवश्यकता है। 1936 के बाद निराला की रचनाओं मे वैयक्तिक स्वर की अपेक्षा सामाजिक यथार्थवादी स्वर अधिक गूंजने लगा। प्रखर वैयक्तिकता के बाद सामाजिक दृष्टि का पनपना अनिवार्य था। प्रगति का अर्थ है जिंदगी को आगे बढाना। जो व्यवस्था है उसमे 'परिवर्तन' लाना। इस धारा के प्रमुख कवियों ने समाज में व्याप्त समस्याओं को अपनी रचनाओं के माध्यम से अभिव्यक्त किया है।[1]

इस काल के कवियों ने पूँजीपति वर्ग के प्रति घृणा और रोश जाग्रत कर शोषितों को उनके अधिकार दिलाने का कार्य अपने काव्य के माध्यम से किया है।

केदारनाथ अग्रवाल– इस समय के लोगों के जीवन में किस तरह दुःख दैन्य था इसके बारे मे वे लिखते है –

'' राग क्रोध, तकरार, द्वेश से
दुःख से कातर
आज ग्राम की दुर्बल धरती
घबराती है।'' [2]

इस काल के लोगों का जीवन किस तरह शोशितों का जीवन बन गया था। और वह सब कुछ चुपचाप कैसे अन्याय सह रहे थे। इसके बारे में कवि लिखते है–

'' यह बेचारा बहरा बनकर
चुप रहता है
जिन्दा है तो भी मुर्दा है।'' [3]

इस तरह की स्थिति को अगर बदलना है तो क्रांति की आवश्यकता है –

Title : *प्रगतिवादी काव्य में जन–चेतना*
Source:Indian Streams Research Journal [2230-7850] *गिरि डी.व्ही.* **yr:2013 vol:2 iss:12**

DSpace™

'' ऐ दधीचो। शक्ती का डंका बजायो,
शांति का उल्हासमय सूरज उगाओ
लाल सोने का सबेरा चमकाओ।''[4]

इस तरह कवि लोगो को क्रांति करने के लिए प्रोत्साहित करते है। अपने अधिकारो के प्रति उन्हें सजग करना चाहते है। और आजादी पाने के लिए हमे लडना होगा। जिस तरह किसान आपना पसीना बहाकर इस धरती को हरा–भरा कर देता है उसी तरह लहू सींचकर इस धरती को स्वतंत्र करने की कामना वह रखता है–

'' हम अपना बीज बोएंगे,
हम अपना प्राण लोभेंगे,
कि आजादी उगाना है
गुलामी को मिटाना है।'' [5]

आजादी के बाद भी हमारे देश की परिस्थिति में कोई परिवर्तन नही आया अपितु देश में स्वार्थ एवं कुप्रवृत्तियों ने जन्म लिया। हमारे देश में घूस रूपी घोडा कैसे बेलगाम दौड रहा इसका चित्रण करते हुए कवि लिखते है–

'' स्वधर्म हो गया है वतन का बचाना
ऊपर की आमदनी का पैसा खाना
ज्यादा से ज्यादा नाजायज कमाना
तरह और तरकीब से पकड मे न आना
क्या खूब है जमाना।'' [6]

केदारनाथ अग्रवाल इस काव्यधारा के प्रमुख कवि है। इनके काव्य का मूलाधार लोकमंगल है। वे शोषणकारी व्यवस्था को नष्ट कर जनवादी व्यवस्था लाने का प्रयास करते है। इन शोषित जनता के प्रति उनके मन में करूण भाव दिखाई देता है। वे एक स्वस्थ समाज निर्माण की आशा करते है।

नागार्जुन :–

नागार्जुन हिंदी के प्रगतिशील कवि और कथाकार है। उनके समय उनकी दृष्टि सामान्य जनता पर थी। सामान्य जनता किस तरह दीन–हिन दशा में जी रही है। यह उन्होंने देखा पिडित जनता के कष्टों ने उन्हें प्रभावित किया। कष्ट करने के बाद भी उन्हें भरपेट भोजन नही मिलता इसलिए उनके काव्य में उनका यथार्थ चित्रण हुआ है–

'' कई दिनों तक चूल्हा रोया चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास
कई दिनों तक लगी भीतपर छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त
दाने आये घर के अन्दर कई दिनों के बाद
चमक उठी घर भर की आँखे कई दिनों के बाद
कौए ने खुजलाई पाँखें कई दिनों के बाद।''[7]

कुछ दिनों तक उन्ही खस्ता हालत और जब घर पर अनाज आता है, तब घर भर के लोग कैसे उसे ललचाई हुई नजरों से देखते है और खुश होते है यह बात इन पंक्तियों के माध्यम से स्पष्ट होती है। लेकिन आजादी मिलने के बाद भी इस तरह की हालत पुरी तरह नही बदली है। लोगो को लगा कि आजादी के बाद हम सुख चैन से जी सकेंगे। लेकिन आज भी मजदूरों और किसानों को, जो देश के अन्नदाता है वह दाने–दाने के लिए तरस रहे है। इस स्थिति को देखते हुए कवि भारतमाता के ह्रदय का दुःख इस प्रकार व्यक्त करते है–

'' जीभ कटी है भारतमाता मचा न पाती शोर
देखो धँसी धँसी ये आँखे, पिचके पिचके गाल
कौन कहेगा आजादी के बीते तेरह साल।'' [8]

कवी को हमारे यहाँ के किसानों की खस्ता हालत देखकर दुःख भी होता है। लेकिन वे इन लोगो को सुख भी उपलब्ध करना चाहते हैं वे आशावादी भी है। और जब मजदुरों और किसानों की स्थिती बदलेगी तब वे –

'' सुजला सुफला शस्य श्यामला माता के गुण गाएंगे।
पानी की खातिर पौंधो को कभी नही तरसाएंगे।
बच्चों जैसी फसलों पर निशि दिन सिनेह बरसाएंगे।
नाहक सिर पर कोटि–कोटि का कर्जा नही बढाएंगे।'' [9]

इस तरह किसानों की हालत में परिवर्तन हो सकता है। ऐसी कवि को आशा है।

उनका देश प्रेम निम्नलिखित पंक्तियों में देख सकते है –

'' खेत हमारे, भूमि हमारी, सारा देश हमारा है,

इसलिए तो हमको इसका चप्पा–चप्पा प्यारा है।'' [10]

कवि नागार्जुन शोषित जनता का दुःख हमारे सामने लाते है और उसे मिटाने के लिए वे लोगों को अपने काव्य के माध्यम से जागृत करते है। कवि ऐसे समाज के निर्माण में प्रयत्नशील है जो वर्गविहीन हो शोषणहीन हो।

शंकर शैलेंद्र–

इनकी अनेक प्रगतिशिल रचनाए है। उन रचनाओं मे इन्होंने शोषित जनता के शोषण का चित्रण किया है। उनकी रचनाओं के माध्यम से यह भी देखने को मिलता है कि संघर्ष के बाद ही जनता को कुछ न कुछ मिलेगा। लेकिन कवि आशावादी भी है। जनता जब संघर्ष करेगी। तब उनकी जय होगी और उनके जीवन में स्थिरता आएगी –

'' ये गम के और चार दिन, सितम के और चार दिन
ये दिन भी जाएंगे गुजर, गुजर गए हजार दिन
तू जिन्दा है तो जिंदगी की जीत में यकीन कर
अगर कही है, स्वर्ग तो उतार ला जमीन पर।'' [11]

रामविलास शर्मा – कवि शोषित जनता का चित्रण इस प्रकार करते है–

'' इस धरती पर जो श्रम करते हैं
उनके तन की पर्तो में अब सूख गया है
रक्त, रेत पर गिरी हुई जल की बूँदों सा।'' [12]

इस प्रकार शोषित जीवन जिनेवाले मजदूर और किसान को कवि क्रांति का आह्वान करते है–

'' कुसंस्कृत भूमि में किसान की
धरती के पुत्र की,
जोतनी हैं गहरी दो चार बार, दस बार
बोना महासिक्त वहाँ बीज असंतोष का
काटनी है नये साल फागुन की फसल क्रांति की।'' [13]

रामविलास शर्माजी को विश्वास है, कि इन सामन्ती कुचक्रो से शोशित जनता को मुक्ति अवश्य मिलेगी। श्रमरत जनता के विजय की उन्हें आशा है–

'' गत सामन्ती संस्कृति के मिटते छूहों पर
अवश्य सुनाई देगी फिर
गंगा की अविरल धारा सी
नवयुग की श्रमकर जनता की चाप नई।'' [14]

उपर्युक्त कवियों के अलावा शिवमंगल सिंह 'सुमन', नरेंद्र शर्मा, डॉ.रांगेय राघव ऐसे कई कवि है जिनके काव्य में हमे तत्कालीन समाज का चित्रण दिखाई देता है। उन्होंने उस समय की शोषित जनता को अपने काव्य के माध्यम से अन्याय के विरोध में खडा कर दिया। इस प्रकार हम देख सकते है, कि इस समय के सभी कवियों ने जनता की करूण दशा का चित्रण अपने काव्य के माध्यम से किया और इस स्थितिसे छुटकारा पाने के लिए उनमें क्रांति की भावना निर्माण की जिससे शोषणवादी व्यवस्था नष्ट हो, वर्गविहीन समाज का निर्माण हो, इस तरह प्रगतिवादी कवियों का उद्देश्य पूँजीपति वर्ग के प्रति घृणा और रोश जागृत कर शोषितों को उनके अधिकार दिलाने का रहा है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1.आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास– डॉ.सूर्यनारायण रणसुभे– पृ. 67, 68
2.हिंदी की प्रगतिशील कविता– डॉ.सलमा खान– पृ. 259, 260, 261, 262, 263, 264, 266, 267, 268.